clinics in Punjab, they will have to look at these aspects. That is one of the purposes. Apart from that, the Government is also encouraging diversification in different ways.

Another base station in Antarctica

*282. SHRI K.M. SAIFULLAH: Will the Minister of OCEAN DEVELOPMENT be pleased to state:

(a) whether India propose to set up another permanent base station in Antarctica;

(b) if so, the details thereof, and

(c) the target for setting up the station?

THE MINISTER OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT, MINISTER OF SCIENCE AND TECHNOLOGY AND MINISTER OF OCEAN DEVELOPMENT (DR. MURLI MANOHAR JOSHI): (a) to (c) Yes, Sir. A proposal to set up another research station in Antarctica is under consideration by the Government of India and the details are being worked out.

SHRI K.M. SAIFULLAH: Sir, I had put three questions to get the details in regard to the base station in Antarctica. But the hon. Minister has given a one-sentence reply saying that the details are being worked out. Anyhow, I would like to put my supplementary. Is it a fact that the Gangotri Station has been constructed for scientific research? I would like to know whether oxygen is available there or not.

डा. मुरली मनोहर जोशी: श्रीमन् इस समय वहां पर हमारा जो केन्द्र काम कर रहा है उसका नाम मैत्री है। दक्षिण गंगोत्री नामक केन्द्र, हमारा पहला केन्द्र था। उसका जीवन 1988 में समाप्त हो गया है। इसके बाद दक्षिणी गंगोत्री नाम का पहला केन्द्र न होकर, मैत्री नाम से दूसरा केन्द्र काम कर रहा है। इसके भी जीवन का अब समाप्त होने का समय आ गया है। इसका भवन अब जीर्ण-शीर्ण हो गया है। जो इसके बहुत सारे उपकरण रखे थे, वे अब पुराने हो गए हैं। हमें अंटार्कटिका में अनुसंधान के काफी नये आयाम मिले हैं इसलिए एक नए केंद्र की स्थापना की बात हो रही है तथा साथ ही इस पुराने केंद्र को सुदृढ़ करके इसका उपयोग कर सकें, इसके बारे में भी चर्चा हो रही है। जैसे ही इसका विवरण पूरा होगा, डिटेल्स हमारे सामने आ जाएंगी, हम इस पर निर्णय लेंगे क्योंकि वैज्ञानिक अनुसंधान केंद्रों की स्थापना पर हमें

बहुत गहराई से विचार करना पड़ता है। हम एक अंतर्राष्ट्रीय संधि से भी बंधे हुए हैं इसलिए इसके अंतर्गत भी हमें विचार करना पड़ता है। इसको पूरा करने में कुछ समय लगता है लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि हम इसे यथाशीघ्र स्थापित करने जा रहे हैं।

SHRI K.M. SAIFULLAH: My second supplementary is this. I would like to know from the hon. Minister whether they have tried to break the frozen ice there to see whether there is a possibility for passage of vessels or ships on that water.

डा. मुरली मनोहर जोशी: सभापति जी, ये ऐसी समस्याएं हैं जिनके बारे में वैज्ञानिक समय-समय पर कार्य करते रहते हैं। अंटार्कटिका के क्षेत्र की अपनी अलग से बहुत सारी विशेषताएं हैं। जहां तक ओजोन का सवाल है तो शायद ओजोन के बारे में सबको मालूम ही है कि सबसे पहले इसकी जानकारी अंटार्कटिका में ही मिली थी। हम आज भी इसके बारे में अध्ययन कर रहे हैं, अनुसंधान कर रहे हैं। अनेक देशों द्वारा अनुसंधान किए जा रहे हैं। हमारी यही चेष्टा रहती है कि वहां से जितनी भी प्राकृतिक क्रियाएं होती हैं उनका गहराई से अध्ययन किया जाए। ओजोन का भी अध्ययन किया जा रहा है कि किसी तरह से यदि वहां गर्म पानी से प्रक्रिया हो सके और कुछ और अधिक जानकारी मिल सके, उसके लिए भी हम प्रयत्नशील हैं लेकिन ये सब काम न तो एक दिन में पूरे होते हैं और न ही इनकी सूचना एकदम से हमारे पास आती है। जब कोई जानकारी हमें विस्तृत रूप से उपलब्ध हो जाती है, परिणाम मिल जाते हैं, छप जाते हैं तभी बताने के काबिल होते हैं। यदि सम्मानीय सदस्य अंटार्कटिका के किसी विशेष क्षेत्र के बारे में जानकारी उपलब्ध करना चाहते हैं तो वे हमें अलग से नोटिस दें, हम उन्हें वह जानकारी उपलब्ध करा देंगे।

SHRI C. RAMACHANDRAIAH: Sir, first of all, I would like to congratulate the scientists, who were sent to Antarctica, on their excellent work and on the reports which they have submitted. Sir, I understand, there is a proposal with the Government to set up a permanent base station there. In this connection, I would like to mention that in yesterday's and today's newspapers, there is a news-item which reads: "Greenhouse Effect--A big mass of snow of about 1,300 square miles is melting." I would like to know how this is going to affect our plants". Will the Minister be able to respond to this?

डा. मुरली मनोहर जोशी: सभापति जी, इसमें एक क्षेत्र ऐसा है, अगर सम्मानीय सदस्य चाहेंगे तो उस क्षेत्र का नक्शा मेरे पास है, इसे मैं इन्हें बता सकता हूं, और सदस्य देखना चाहें तो वे भी देख सकते हैं, वहां ऐसी घटनाएं होती रहती हैं। वहां जो बहुत तेज हवाएं चलती हैं उसकी वजह से वह घूमता रहता है। अगर दूसरे हिस्से से बर्फ का कोई हिस्सा टूटता

है तो वहां तापमान की ज्यादा कमी नहीं होती इसलिए फिर जुड़ जाता है। लेकिन कुछेक इलाके ऐसे हैं जहां तापमान की कमी साढ़े चार डिग्री सैल्सियस तक हो गई है। इसलिए वहां यह टुकड़ा टूटता है, बर्फ पिघलती रहती है। ये जो तेज हवाएं चलती हैं उससे वह घूमता-फिरता रहता है वहां से खिसककर आगे नहीं आता है। लेकिन अगर कभी प्राकृतिक घटनाएं हो जाएं और वह उस स्थान से हटकर आगे की तरफ आने लगे तो निश्चय ही काफी संकट पैदा हो सकते हैं। लेकिन काफी वर्षों से देखा जा रहा है कि जब ये टूटते हैं तो टूटने के बाद किसी को खतरा पहुंचाने की तरफ नहीं बढ़ते।

Retrenchment of SAIL employees

*283. SHRIMATI VANGA GEETHA: Will the Minister of STEEL be pleased to state:

(a) the number of employees of SAIL retired under Voluntary Retirement Scheme during the last three years; and

(b) the amount, the undertaking is expected to pay upto 31st March, 2003, as retirement benefits to persons going for retirement?

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF STEEL (SHRI BRAJ KISHORE TRIPATHY): (a) and (b) A statement is laid on the Table of the House.

Statement

(a) The number of employees of the Steel Authority of India Limited (SAIL) who have retired under Voluntary Retirement Scheme (VRS) during the last three years is as follows:

Year*	Number of Employees
1998	5975
1999	13617
2001	6510
TOTAL	26102

*The year 2000 had no VRS in operation.